प्रार्थना गीत (दैव दशकम्)

श्री नारायण गुरुदेव

प्रभु! करें परिपालन सदा,
साथ न छोडें यहाँ हमारा।
नाविक तू, भवसागर तरण
महा-नाव तेरा पद।

तू सत्य-ज्ञान-आनन्द,
तू वर्तमान-भूत-भविष्य,
भिन्न नहीं, तू ही है-
वाणी की चेतन ध्वनि।

एक-एक कर गिन-गिन के
मिटे अंतिम दृश्य तो,
स्तब्ध हो दृक् सा चित्
मिले तुझ में, निस्पन्द।

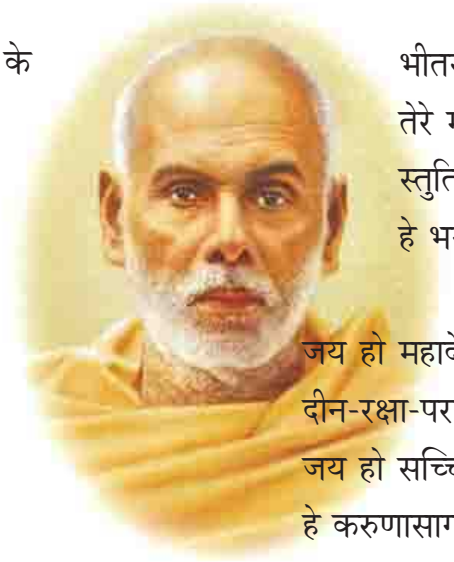

भीतर भी बाहर भी भरे
तेरे महिमामय पद की
स्तुति करते, सदा हम।
हे भगवान! तेरी जय हो।

अन्न, वसन सर्वस्व
बिना रोकटोक दिलाता,
धन्य-बनाता, रक्षक!
तू एक ही है, हमारे नाथ।

जय हो महादेव!
दीन-रक्षा-परायण!
जय हो सच्चिदानन्द!
हे करुणासागर! जय हो।

सागर, लहर, हवा और
गहराई सा हम भी
माया, तेरी महिमा व तू भी,
मुझ में ही समा जाए ।

तेरे अथाह ज्योतिर्मय-
दिव्य सागर की गहराई में
निमग्न हों हम, बसें वहाँ,
बसें सदा, बसें सुख।

सृजन है तू, सृजनहार भी,
सृष्टि का सर्वस्व भी तू
हे देव! स्वयं तू ही है
सृष्टि की सामग्री भी।

माया तू, मायिक भी
मायारंजक भी तू है
माया हटाके बना तू,
मुक्ति दाता आर्य भी ।

Translated by

Dr. Mahesh.S M.A. BEd. MPhil Ph.D
(PG Diploma in Functional Hindi-Translation and Journalism)
Assistant Professor, Dept. of Hindi
S.N. College, Kollam
Ph: 9349079301

भावार्थ

1. हे ईश्वर! यहाँ हमेशा हमारी रक्षा कीजिए, कभी हमारा हाथ न छोड दीजिए अर्थात् कभी भी आपसे अलग न करें। आप का नामरूपी विराट यंत्रवत् जहाज़ के ज़रिए मुझे इस भवसागर पार करने दीजिए। सच में आप इस जहाज़ का कर्णधार है। जल्दी ही आप हमें आवागमन दुःख से बाहर लाइए।

2. इस संसार की हरेक वस्तु की हम जॉच करें तो यह सत्य समझ सकते हैं कि जो कुछ इन्द्रिय गृहीत है, वे सारे दृश्य केवल बिंब (प्रतीक मात्र) थे। दृष्टि तो वहाँ अपने स्वरूप में सुस्थिर थी। इतना ही नहीं जिस चित्त से हम ने ईश्वर की खोज की वही उसका वास्तविक वासस्थान है, यह पहचानने का विवेक ईश्वर हमें प्रदान करें। ये पंक्तियाँ अद्वैत दर्शन का सच्चा दृष्टान्त है।

3. अन्न-वस्त्र आदि सब कुछ देकर हमें निरन्तर प्रसन्न रखनेवाले तथा हमारी रक्षा करनेवाले आप ही सारे दुखों से हमें बचानेवाले हमारे महा प्रभु!

4. इधर सागर और मानव की तुलना की गयी है। सागर की लहर, हवा और गहराई के समान हैं, हम सब। लहर जैसे आप की माया, हवा जैसी आप की महिमा, सागर की गहराई जैसे हैं आप। हमें यह सत्य समझने का विवेक भी आप प्रदान करें। अर्थात् अद्वैत संकल्प में हम दृढ बनें।

5. सृष्टि और स्रष्टा दोनों आप ही हैं। इस सृष्टि की हर एक वस्तु तथा सृष्टि केलिए इस्तेमाल सामग्री भी आप हैं। अर्थात् सृष्टि, स्थिति और प्रलय के पीछे आप ही है।

6. संसार की सृष्टि के कारणभूत बनी दिव्य माया शक्ति आप ही है। आप ही है सृष्टि-स्थिति-प्रलय का इन्द्रजाल रचकर आनन्द लूटनेवाले महा जादूगर। अंत में हमें सांसारिक मायामोह से मुक्त कर सायूज्य प्रदान करनेवाले भी आप हैं।

7. आप सत्य है, ज्ञान है और आनन्द भी है। यह वर्तमान, भूत तथा भविष्य रूपी समय भी आप हैं। विचार कर देखें तो सारे लौकिक अनुभवों के आधार भूत खडी दिव्य प्रणव (ॐ कार) ध्वनि आप ही है।

8. आप हमारे भीतर और बाहर दिव्य रूप में भरे हैं। आप के महत्वपूर्ण नाम की स्तुति हम सदा करते हैं। हे ईश्वर आप के जयकार से यह विश्व मुखरित हो उठे।

9. हे देवों के देव महादेव आप की जय हो। आप इस पृथ्वी के दीनों की रक्षा करनेवाले यानि सच्चे दीनबन्धु हैं। आप शुद्ध बोध और आनन्द के स्वरूप हैं। आप की विजय सदा हो।

10. अंतिम समय जब हम गहराई से युक्त तेरे ज्योति रूपी सागर में डूबें तब हमें आप की अगाधता की पहचान मिले ताकि हम वहीं बस जाए। केवल परमानन्द ही बाकी रह जाए।